ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय
पन्तनगर–263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)
फोन नम्बरः 05944–233032

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – उधम सिंह नगर

उपमहानिदेशक (कृषि मौसम विज्ञान), भारत मौसम विज्ञान विभाग, पुणे — निदेशक, मौसम केन्द्र, देहरादून

वर्षः 26 अंकः 70 बुलेटिन अवधिः 9–13 सितम्बर, 2017 दिनः षुक्रवार दिनाँकः 08 सितम्बर, 2017

मौसम पूर्वानुमानः

भारत सरकार के **पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय** द्वारा वित्त पोषित एवं **भारत मौसम विज्ञान विभाग** द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत **राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान केन्द्र, भारत मौसम विज्ञान विभाग, मौसम भवन, नई दिल्ली** द्वारा पूर्वानुमानित तथा **मौसम केन्द्र, देहरादून** द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा **उधम सिंह नगर एवं नैनीताल जिलों के मैदानी क्षेत्रों में अगले पाँच दिनों** में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :–

पूर्वानुमानित मौसम तत्व	मौसम पूर्वानुमान – उधम सिंह नगर				
	09–09–2017	10–09–2017	11–09–2017	12–09–2017	13–09–2017
वर्षा (मिमी0)	0	0	5	5	5
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	33	34	33	33	32
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	23	23	24	24	24
बादल आच्छादन	मध्यम बादल	मध्यम बादल	मध्यम बादल	घने बादल	घने बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	85	90	90
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	60	60	60	60	60
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	008	004	006	008	012
वायु की दिशा	उत्तर–पश्चिम	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व	दक्षिण–पूर्व

गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विष्वविद्यालय, पन्तनगर स्थित कृषि मौसम विज्ञान वेधषाला (समुद्रतल से ऊँचाई–243.8 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों (**1 से 7 सितम्बर,** 2017 सुबह 8:30 तक) में आसमान में मध्यम से पूर्णतः बादल छाये रहे तथा 161.6 मि0मी0 वर्षा हुई, अधिकतम तापमान 26.5 से 33.0 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 23.5 से 24.8 डि0से0 के बीच रहा तथा वायु में सुबह 0712 बजे सापेक्षित आर्द्रता 87 से 96 प्रतिशत व दोपहर 1412 बजे सापेक्षित आर्द्रता 63 से 96 प्रतिशत एवं हवा 2.3 से 5.0 कि0मी0 प्रति घंटा की गति से मुख्यतः पश्चिम–उत्तर–पश्चिम दिशा से चली।

ऐसे अनुमानित मौसम में गो0ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्यो0 विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

कृषि मौसम परामर्ष

फसल प्रबन्धः

❖ धान में तना बेधक का प्रकोप होने पर क्लोरान्ट्रानिलिप्रोले 20 एससी, 150 मि0ली0/है0 या कारटाप 50 एसपी 1कि0ग्रा0/है0 या फ्लूबेन्डियामाइड 480 एससी 75 मि0ली0/है0 या मोनोक्रोटोफास 36 एसएल 1400 मि0 ली0/है0 की दर से छिड़काव करें।

❖ मक्का, ज्वार एवं बाजरा फसलों में पुष्प निकलने तथा दाना पड़ने का समय है तथा इस समय खेत में पर्याप्त नमी की आवश्यकता होती है। अतः वर्षा न हो रही हो तो आवश्यकतानुसार सिचांई करें। अतिरिक्त जल हेतु उचित जल निकास की व्यवस्था रखें ताकि पानी खेत में जमा न हो।

❖ इस समय धान में बाली बनने या बाली निकलने की अवस्था में है और धान की यह अवस्था पानी की कमी के प्रति अति संवेदनशील है तथा इससे बालियों के आकार एवं दानों की संख्या एवं बीज भार में कमी आती है। अतः खेत में पर्याप्त नमी बनायें रखें एवं खेत से पानी अदृश्य होने के एक दो दिन बाद पुनः सिंचाई करें।

❖ धान में पत्ते नोक से नीचे की तरफ पीले पड़कर सुखने की अवस्था में स्ट्रेप्टो साइक्लीन 15 ग्रा0 . कॉपरऑक्सीक्लोराइड 500 ग्रा0 500 ली0 में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

❖ मक्के की पत्तियो पर लाल रंग के अण्डाकार धब्बे दिखाई पडने पर मेन्कोजेब 1.5 किग्रा0 का घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे।

❖ धान की पत्तियो पर हल्के पीले रंग के पतले एवं लम्बे धब्बे जो बाद में कत्थई रंग के हो जाते है ऐसी स्थिति दिखने पर 5 किग्रा0 जिंक सल्फेट. 20 किग्रा0 यूरिया का 1000 ली0 पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

❖ धान की पत्तियों पर कहीं–कहीं हिस्पा कीट का भी प्रकोप देखा जा रहा है। जहाँ कहीं इनका प्रकोप दिखाई दे वहाँ ट्राइएजोफॉस 40 ईसी, 750 मि0ली0 या मोनोक्रोटोफॉस 36 एसएल 1400 मि0ली0 छिड़काव करें।

❖ धान की फसल में खैरा रोग के लक्षण दिखाई दे तो 5 किग्रा जिंक सल्फेट तथा 20 किग्रा यूरिया अथवा 2.5 किग्रा बुझे चूने को 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

❖ अगोला बेधक एवं चोटी बेधक कीट की रोकथाम हेतु कार्बोफ्यूरान 3जी का 30 किग्रा/हैक्टेयर का प्रयोग करें। इस समय खेत में नमी होना आवश्यक है।

❖ गन्ने की फसल में जल भराव वाले खेतों में जल निकास की व्यवस्था करें।

❖ कीटनाशी का छिड़काव बारिश न होने पर ही करें।

उद्यान प्रबन्धः

❖ अरबी व अदरक की फसल हेतु जिन क्षेत्रों में ज्यादा वर्षा हुई है वहाँ पानी का निकास करें व जहाँ वर्षा नहीं हुई है वहाँ सिंचाई कर खरपतवार निकालें एवं मिट्टी चढ़ाएँ।

❖ अरबी की फसल में चूसनें वाले कीड़ों की रोकथाम हेतु एमिडाक्लोरपिड + डाईएथीन 45, 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव दस दिन के अंतर से करें।

❖ पिछलें माह बोई गई बैगन की फसल में निराई–गुड़ाई करें। नत्रजन की बची हुई आधी मात्रा का एक चौथाई हिस्सा खेत में टॉप ड्रैसिंग के रूप में डालें और शेष एक चौथाई नत्रजन का 60–65 दिन के अंतराल पर खड़ी फसल में टॉप ड्रैसिंग के रूप में दें।

❖ फूलगोभी में कीड़ों से बचाव हेतु मैटासिस्टॉक या एमिडाक्लोरपिड 0.2 प्रतिशत घोल का छिड़काव करें।

❖ पपीतें के बगीचों में जल निकास का उचित प्रबंध करें।

❖ जैसा कि आंवले में फल वृद्धि शुरू हो गयी है अतः अच्छी गुणवत्ता के फल हेतु बोरैक्स 200–250 ग्राम प्रति वृक्ष थालों मे प्रयोग करें।

❖ इस माह में जाला बनाने वाला टेन्ट कैटरपिलर कीट का भी प्रकोप होता है इसलिए जाला छुड़ाने वाले यंत्र से जाले को साफ करे। एवं प्रभावित प्ररोहो को काटकर कीड़ो सहित जला दे। अगर प्रकोप अधिक हो तो कीटनाशको जैसे 0.2 प्रतिशत कार्बरिल या 0.05 प्रतिशत क्वीनालफॉस का छिड़काव करे।

❖ रेडरस्ट तथा एन्थ्रेक्नोज के नियत्रंण हेतू 0.3 प्रतिशत कॉपर ऑक्सी क्लोराइड (3.0 ग्रा0 प्रति ली0) का छिड़काव करे।

❖ नये बाग लगाऐ।

पशुपालन प्रबन्धः

- ❖ इस महीने पशुओं खासकर भैंसों में प्रसव की दर बढ़ जाती है। अतः जो पशु ज्ञामन है उनको अन्य पशुओ से अलग कर थोड़ी मात्रा में कई बार अतिरिक्त पूरक आहार दें अन्यथा उन्हें आफरा (पेट फूलना) की समस्या हो सकती है।
- ❖ इस मौसम में भेड़ो को एनटैरोटाक्सीमिया रोग लग जाता है जिसके कारण उनके आतों में सूजन आ जाती है। भेड़ों को इस रोग से बचाने हेतु पशु चिकित्सक की सलाह से टीका लगवाएं।
- ❖ पशुओं को हरा चारा कम मात्रा में दें तथा हरे चारे में सूखा चारा मिलाकर दें।
- ❖ पीने का पानी स्वच्छ होना चाहिए तथा गन्दे पानी में परजीवी जनित व फफूंदी जनित विषाणु की सम्भावना होती है।
- ❖ नमी की वजह से आहार में फफूॅदी लग जाती है जिससे आहार में पोषक तत्व की कमी हो जाने से अपलाटॉक्सीकोशिश नामक बीमारी हो जाती है। इससे मुर्गियों के पेट में कीड़े पड़ने से अण्डा देने की क्षमता घट जाती है ऐसी मुर्गियों को पशु चिकित्सक की सलाह से कृमिनाशक दवा महीने में एक बार अवश्य दें।
- ❖ पशुओं का आवास सूखा होना चाहिए इसके लिए समय–समय पर चूने का छिड़काव करें।
- ❖ पशु को ब्याने के बाद अच्छी तरह से साफ–सफाई करके निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह से यूटरोटोन/हरीरा/गाइनोटोन नामक दवा में से किसी एक दवा की 200 मिली मात्रा सुबह शाम तीन दिनों तक गर्भाशय की सफाई हेतु देनी चाहिए।
- ❖ प्रसव के तुरन्त बाद नवजात बच्चे की साफ–सफाई कर उसकी नाभी को धागे से बांधकर किसी साफ चाकू या ब्लेड से काटकर उस पर जैन्सन वायलेट पेन्ट अथवा टिंचर आयोडीन लगाना चाहिए।

डा0 आर0 के0 सिंह
प्राध्यापक एवं प्रिंसिपल नोडल अधिकारी
ग्रामीण कृषि मौसम सेवा,
गो.ब. पन्त कृषि एवं प्रौद्यो. विष्वविद्यालय, पन्तनगर